

फलोद्यान का रेखांकन एवं संस्थापना

मनोज कुमार सिंह*, विभू पाण्डेय*, खुशीद आलम* और दीपेश केसरी*

फलों के उत्पादन की दृष्टि से विश्व में भारत का दूसरा स्थान है। बागवानी एक लम्बे समय का निवेश है। अतः एक फलदार बगीचे की स्थापना एवं प्रबंधन बहुत ही सावधानीपूर्वक और योजनाबद्ध तरीके से किया जाना चाहिए। मनुष्य के जीवन में फलों का बहुत महत्व है। मानव के शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, प्रोटीन, वसा एवं खनिज पदार्थ अति आवश्यक एवं गुणकारी होते हैं। इनकी पूर्ति फलों को दैनिक आहार के रूप में समाहित कर की जाती है।

विभिन्न क्षेत्रों में लगाये जाने वाले फल जैसे आम, आंवला, पपीता, नींबू, अमरूद, बेर, फालसा, जामुन, बेल इत्यादि पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। उत्तर प्रदेश में फलदार वृक्षों की बागवानी सफलतापूर्वक करने हेतु संबंधित ज्ञान के साथ-साथ निपुणता एवं लगन की भी आवश्यकता होती है। प्रारंभ में किए गए गलत निर्णयों के दुष्प्रभाव लम्बे समय तक बने रहते हैं। फल वृक्ष दीर्घकालीन होते हैं और लंबे समय तक आमदनी देते रहते हैं। बाग लगाने की योजना बनाने के पहले निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए;

स्थान का चुनाव

बागवानी में दीर्घकालीन निवेश होने के कारण, स्थान का चुनाव बहुत ही आवश्यक हो जाता है। एक अच्छा बगीचा लगाने के लिए चयन ऐसे स्थान का करें, जो शहर के नजदीक तथा जहां आवागमन के साधन सहजता से उपलब्ध होने के साथ ही श्रमिकों की उपलब्धता, पानी की व्यवस्था, जल निकास इत्यादि का समुचित प्रबंध हो। यह भी ध्यान रखें कि यहां पाला कम पड़े और जो प्राकृतिक विपदाओं व जंगली पशुओं से सुरक्षित हो। ऐसे स्थान पर बाग लगाने से फलों को बेचने में सुविधा रहती है, साथ ही अन्य सामान जैसे-उर्वरक, दवाइयाँ, यंत्र आदि को बाजार से खरीदे जाने में आसानी रहती है। स्थान ऐसा हो जहां आसानी से पहुँचा जा सके।

बगीचे के लिए उपयुक्त भूमि

सभी तरह की मृदा में फल पौधे नहीं लगाये जा सकते। अतः बगीचे की रूपरेखा



अमरूद का बगीचा

बनाने से पहले उस क्षेत्र की मृदा की जाँच करवाकर उसमें उपस्थित पोषक तत्वों की जानकारी अवश्य ज्ञात कर लेनी चाहिए। इस भूमि में 2 मीटर की गहराई तक सख्त कठोर कंकड़युक्त परत नहीं हो और न ही उसमें अधिक जलभराव की समस्या हो। भूमि का चुनाव करने के बाद उसका समतलीकरण करना भी आवश्यक है। भूमि की भीतरी सतह तक खुदाई आवश्यक है ताकि पथरीली सतह को हटाया जा सके। भूमि के अन्दर पथरीली सतह जड़ों के बढ़ने तथा फैलने में बाधा पैदा करती है। फल पौधों की सही बढ़ोतरी और अधिक गुणवत्तापूर्ण फल उत्पादन के लिए मृदा का पी. एच. मान 5.5 से 7.5 तथा मृदा दोमट से बलुई दोमट और उपजाऊ होनी चाहिए।

फलदार पौधों का चयन

पौधे स्वस्थ तथा रोगरहित होने चाहिए, इसके लिए पंजीकृत पौधशालाओं और विश्वस्त स्रोतों से ही पौधे खरीदें। कलम का

जोड़ भूमि से लगभग 25-30 सें.मी. ऊँचा होना चाहिए। उत्तर प्रदेश की जलवायु में खासतौर से आम, अमरूद, पपीता, आंवला, नींबू, बेल, बेर व आड़ू आदि फलों की खेती आसानी से की जा सकती है। जिन भागों में पाले का ज्यादा असर रहता है, उन इलाकों में पपीते का वृक्षारोपण नहीं करना चाहिए। अधिक गर्मी व लू वाले इलाकों में बेर और बेल के पेड़ लगाने चाहिए। अधिक नमी वाले इलाकों में मौसमी, संतरा व किन्नु के पेड़ लगाने चाहिए।

उन्नत प्रजातियों का चुनाव

बाग हेतु किस्मों का चुनाव मृदा के स्वभाव एवं जलवायु के अनुसार ही करना चाहिए। फल वृक्ष के चुनाव के साथ ही उसकी सही प्रजाति का चयन भी जरूरी है ताकि अच्छी गुणवत्ता के उत्पाद के साथ ही अधिक पैदावार मिल सके। किस्म का चुनाव करते समय उद्यान विभाग के अधिकारियों एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों की सलाह से ही करना उचित है।

*उद्यान महाविद्यालय, सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ

सारणी:- फलदार वृक्षों की अच्छी एवं नवीन किस्में	
फल	किस्म
अमरूद	इलाहाबाद सफेदा, लखनऊ-49, ललित, श्वेता, पन्त प्रभात, अर्का अमूल्य, अर्का मृदुला, इलाहाबाद सुर्ख, पन्त प्रभात, हिसार सुर्ख, हिसार सफेदा
आम	दशहरी, लंगड़ा, चौसा, बाम्बेग्रीन, रटौली, आम्रपाली, मल्लिका, पूसा अरुणिमा, पूसा सूर्या, दशहरी-51, रामकेला, अम्बिका, पूसा पीतांबर, पूजा श्रेष्ठ
पपीता	पूसा मैजेस्टी, पूसा ड्वार्फ, पूसा नन्हा, सूर्या, रेड लेडी, ताइवान, पूसा डिलीशियस, कुर्ग हनीड्यू, पूसा जायंट
नींबू	पन्त लेमन, कागजी कलां, प्रमालिनी, विक्रम, साईं शरबती, एन.आर.सी.सी. नींबू-7, एन.आर.सी.सी. नींबू-8
बेर	गोला, सेब, उमरान, इलायची, छुआरा, थार सेविका, गोमा कीर्ति, थार भुज, कैथली, टिकडी
बेल	गोमा यशी, थार दिव्या, थार नीलकंठ, एन.बी.-5, एन.बी.-9, पन्त अपर्णा, पन्त शिवानी, पन्त उर्वशी
आड़ू	सहारनपुर प्रभात,
आंवला	गोमा ऐश्वर्या, बनारसी, हाथीझूल, चकिया, एन.ए-4, एन.ए-7, एन.ए-10

बाड़ लगाना

भूमि की तैयारी के पश्चात जंगली पशुओं से बगीचे की रक्षा करने के लिए खेत के चारों ओर कांटेदार तथा, जालीदार तार अथवा कांटेदार पौधे लगाने चाहिए जैसे बोगेनविलिया, जंगल जलेबी, करौंदा आदि।

वायुरोधी वृक्षों का रोपण

वायुरोधक वृक्ष गर्मी में लू तथा सर्दी में पाले से बचाव तो करते हैं इसके साथ ही यह बाग का सूक्ष्म वातावरण भी परिवर्तित कर देते हैं। जामुन, बेल, शहतूत, खिरनी, देसी आंवला, शीशम, कटहल, इमली आदि इस उद्देश्य के लिए उगा सकते हैं। वायुरोधी वृक्ष अपनी लंबाई के 4 से 6 मीटर दूरी तक बाग की रक्षा करते हैं। बाग में इन वृक्षों की एक या दो कतार लगाई जाती है। इन वृक्षों को बाग में उत्तर व पश्चिम दिशा में लगाया जाता है।

पौधे लगाने का समय

सदाबहारी पौधों जैसे-आम, नींबू, अमरूद, आदि के लिये बरसात का समय (जुलाई-अगस्त) सर्वोत्तम होता है। पर्वतीय अथवा पतझड़ी पौधों जैसे-आड़ू, अलूचा, अंगूर, नाशपाती, आंवला, बेर आदि लगाने के लिए सर्दियों का मौसम (दिसंबर-फरवरी)



बेल का बगीचा

अच्छा रहता है। सिंचाई जल की उपलब्धता होने पर रोपण का कार्य फरवरी-मार्च में भी किया जा सकता है।

गड्डों की खुदाई

गड्डों की खुदाई मई-जून में जब तेज धूप रहती है, तब करनी चाहिए। इनका आकार पौधों के फैलाव व बढ़वार पर निर्भर करता है। बड़े आकार के फल वृक्षों (आम, आंवला, कटहल, बेल, जामुन, लीची आदि) के लिए 1x1x1 मीटर, मध्यम आकार वाले फल वृक्षों जैसे-अमरूद, नींबूवर्गीय फल, अनार के लिए 0.75x0.75x0.75 मीटर व छोटे आकार वाले फल वृक्षों जैसे-पपीता, करौंदा आदि के लिए 0.5x0.5x0.5 मीटर आकार के गड्डों की खुदाई करें। खुदाई के बाद गड्डों को 30 से 40 दिनों तक तेज धूप में खुला ही छोड़ दें, जिसमें मृदा में उपस्थित हानिकारक कीटाणु व जीवाणु समाप्त हो जायें। ऊपर की आधी मिट्टी में प्रति गड्डों की दर से 20-25 कि.ग्रा. सड़ी गली गोबर की खाद के अलावा 150 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 500 ग्राम नीम खली व 50 ग्राम क्लोरोपाइरीफॉस धूल मिलाकर भूमि की सतह से 15-20 सें. मी. ऊपर तक भर दें व व्यवस्थित होने के लिये छोड़ दें। एक-दो बारिश के बाद मृदा जब नीचे बैठ जाए, उसके बाद रोपण का कार्य प्रारंभ करें।

सिंचाई

शुरू के 2 महीने तक पौधों को पानी की ज्यादा जरूरत होती है। इस समय 2-3 दिनों के अंतर पर पानी देना चाहिए। 2 सिंचाइयों के बीच का समय, स्थान, मौसम, भूमि, फलों की किस्म, फलन का समय व

वहां की जलवायु आदि पर निर्भर करता है। यदि बारिश के मौसम में वर्षा होती रहे तो पानी देने की जरूरत नहीं होती है। सर्दी के मौसम में 10-15 दिनों के अंतर पर सिंचाई करनी चाहिए। गर्मी के मौसम में 7-10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए।

पेड़ों की कटाई-छंटाई

पेड़ लगाने के बाद प्रारंभ के 2-3 साल तक सभी पेड़ों को सुदृढ़ बनाने के लिए कटाई-छंटाई की आवश्यकता होती है। भूमि से लगभग दो-तीन फीट की ऊंचाई तक तने को साफ कर लेना चाहिए। तने के ऊपरी भाग में तीन या चार मजबूत भिन्न-भिन्न दिशाओं में बढ़ती हुई शाखाओं को चुन लेना चाहिए और केवल उनको ही बढ़ने देना चाहिए, अन्य शाखाओं को तने के पास से काट देना चाहिए। जैसे-जैसे पेड़ बढ़ते जाएं, उनके थाले बढ़ते जाना चाहिए।

पोषण की मात्रा

वृक्षों की उचित वृद्धि तथा भूमि की भौतिक दशा को ठीक बनाये रखने के लिए



पपीते की भरपूर पैदावार

बगीचों में जीवांश खाद का प्रयोग बहुत आवश्यक होता है। इससे मृदा में हवा तथा पानी का संचार, पोषक तत्वों को प्राप्त करने की क्षमता एवं सूक्ष्म जीवाणुओं की क्रियाशीलता बढ़ जाती है। सामान्यतः एक वर्ष के पौधों में 5 कि.ग्रा. अच्छी सड़ी गोबर की खाद के अलावा 50 ग्राम नाइट्रोजन, 25 ग्राम फॉस्फोरस व 50 ग्राम पोटैश डालें। फलों में पोषक तत्वों की मात्रा को आयु के अनुसार 10 वर्ष तक बढ़ाते रहना चाहिए। इसके बाद यही मात्रा निश्चित कर देनी चाहिए।